International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 4, April 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शोधार्थी शिक्षकों में आत्मस्वीकृति का लिंग, विषय एवं परिक्षेत्र के साथ संबंध

सतीश शर्मा
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ
डॉ. मल्लिका शेखर
सहायक आचार्या, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ

प्रस्तावना

अध्यापक शिक्षण प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। अध्यापक के बिना शिक्षा की प्रक्रिया सफल रूप से नहीं चल सकती। अध्यापक न केवल छात्रों को शिक्षा प्रदान करके ही अपने दायित्व से मुक्ति पा लेता है वरन उसका दायित्व तो इतना अधिक और महत्त्वपूर्ण है कि प्रत्येक व्यक्ति उन्हें पूर्ण करने में समर्थ नहीं है। शिक्षक की क्रिया और व्यवहार का प्रभाव उसके विद्यार्थियों, विद्यालय और समाज पर पड़ता है। इस दृष्टि से कहा जाता है कि अध्यापक राष्ट्र का निर्माता होता है। अतः अध्यापक को अपने कार्यों को सफलतापूर्वक एवं उचित प्रकार से करने के लिए आवश्यक है कि उसमें कुछ गुण अथवा विशेषताएं होनी चाहिए। सामान्यतः एक अच्छे अध्यापक में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है

1. शैक्षिक गुण/योग्यताएं
2. व्यवसायिक गुण
3. व्यक्तित्व सम्बन्धी गुण और
4. सम्बन्ध स्थापित करने का गुण

बी.एड.का प्रक्षिशण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षार्थी–शिक्षक कहा जाता है। यह कोर्स बैचलर ऑफ़ आट्र्स और बैचलर ऑफ़ एजुकेशन दोहरी डिग्री का एक संयोजन है। शिक्षा के क्षेत्र में जाने के लिए यह कोर्स बहुत लोकप्रिय है।

आत्म–स्वीकृति :

"आत्म–स्वीकृति'' **(Self Accetance)** का संप्रत्यय बहुत अधिक प्राचीन नहीं है। आत्म–स्वीकृति के संप्रत्यय का विकास मुख्यतः "आत्म–सम्मान" **(Self Esteem)** से हुआ है। "आत्म–सम्मान" शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग विलियम जेम्स (1890) द्वारा प्रतिपादित मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों में किया गया था (जेम्स 1890)। जेम्स ने आत्म–सम्मान के दो स्वरुप प्रस्तुत किये थे– आत्म–संतुष्टि एवं आत्म–असंतोष। तार्किक रूप से आत्म–सम्मान "आत्म–मूल्यांकन" **(Self Evaluation)** से उत्पन्न होता है। आत्म–सम्मान का उच्च–स्तर "आत्म–स्वीकृति" **(Self Accetance)** कहलाता है। मनोविज्ञान के **(Looking Glass Itself)**

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 4, April 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सिद्धांत के अनुसार आत्म–सम्मान मात्र आत्म–मूल्यांकन नहीं है अपितु व्यक्ति का अन्य व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला आकलन भी इसमें सम्मिलित है। व्यक्ति का "आत्म **(Self)** पारस्परिक एवं सामाजिक अंतर्संबंधो तथा समाज के सदस्यों की व्यक्ति के प्रति धारणाओं अथवा प्रत्यक्षीकरण से विकसित होता है। व्यक्ति स्वयं के व्यक्तित्व एवं "आत्म" को अन्य व्यक्तियों की धारणाओं के अनुसार आकार प्रदान करता है। व्यक्ति की यह प्रकृति अन्य व्यक्तियों को स्वयं के प्रति विचार प्रस्तुत करने हेतु पुनर्बलित करती है (कूले,1902)। इस सन्दर्भ में आत्म–सम्मान सामाजिक मापन के पैमाने के रूप में स्थापित होता है जो किसी व्यक्ति की सामाजिक आधार पर स्वीकृति एवं सामाजिक महत्त्व को स्थापित करता है। व्यक्ति जब समाज में स्वयं के महत्त्व का अनुभव करता है तब वह संतुष्टि का अनुभव करता है जबकि इसके विपरीत परिस्थितियों में वह असंतुष्टि का अनुभव करता है। अर्थात सामाजिक स्वीकृति अथवा सामाजिक महत्त्व व्यक्ति के आत्म–सम्मान में वृद्धि करते हैं जबकि सामाजिक अस्वीकृति अथवा समाज में महत्त्व कम हो जाने से व्यक्ति के आत्म–सम्मान का भी ह्रास होता है (रोजर्स,1959)।

स्वयं को स्वीकार करना ही आत्म–स्वीकृति है अर्थात यह एक ऐसी परिस्थिति है जिसमे व्यक्ति अपनी स्वयं की क्षमताओं एवं योग्यताओं को स्वीकार करता है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व–विकास का यह प्रारंभिक सोपान है। जब तक व्यक्ति अपने गुणों, क्षमताओं एवं सीमाओं को पहचान नहीं लेता है तब तक वह अपने व्यक्तित्व–विकास को समुचित दिशा प्रदान नहीं कर पाता है। विभिन्न विद्वानों ने आत्म–स्वीकृति को भिन्न– भिन्न शब्दों से परिभाषित किया है–

हैनरिक (2014) "स्वयं की क्षमताओं एवं सीमाओं के प्रति जागरूकता ही आत्म–स्वीकृति है शिपार्ड (1978) "व्यक्ति को अपने गुणों, क्षमताओं एवं सामान्य महत्त्व का ज्ञान होना ही आत्म–स्वीकृति है।

व्लहोपौलस (1985) "विभिन्न कमियों , पूर्व व्यवहार एवं रुचियों से प्रभावित हुए बिना स्वयं से संतुष्टि की भावना ही आत्म–स्वीकृति है"।

शिपार्ड (1978) आत्म–स्वीकृति के सन्दर्भ में कहते हैं कि आत्म–स्वीकृति एक व्यक्ति की स्वयं से संतुष्टि या खुशी है, जो अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक मानी गयी है। आत्म–स्वीकृति में व्यक्ति द्वारा अपनी क्षमताओं एवं कमजोरियों के प्रति जागरूकता एवं स्वयं के प्रति एक यथार्थवादी (यद्यपि व्यक्तिपरक) समझ सम्मिलित होती है। यह व्यक्ति में स्वयं के प्रति भावनाओं को पुष्ट करती है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अद्वितीय मूल्यों को अपनाता है।

मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं में आत्म–स्वीकृति को परिवर्तन का साधन माना गया है। परिवर्तन संसार का नियम है और प्रत्येक व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन चाहता है। सफलता का मार्ग प्रशस्त करने हेतु परिवर्तन आवश्यक है और यह परिवर्तन तभी संभव है जब व्यक्ति स्वयं की क्षमताओं एवं सीमाओं से परिचित हो। यह परिचय ही आत्म–स्वीकृति है। आलोचनाओं को त्याग कर तथा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 4, April 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्वयं में उपस्थित दोषों को पहचानकर आत्मोत्सर्ग हेतु आत्म–दृष्टि का विकास कर आत्म–स्वीकृति को सृजित किया जा सकता है।

आत्म–स्वीकृति दो प्रकार की होती है–

1. अनुबंधित आत्म–स्वीकृति एवं
2. अनानुबंधित आत्म–स्वीकृति।

शुलमान, (1987) के अनुसार अनुबंधित आत्म–स्वीकृति व्यक्ति के "आत्म" का नकारात्मक पक्ष है जबकि अनानुबंधित आत्म–स्वीकृति व्यक्तित्व के विकास का सकारात्मक पक्ष है। अनुबंधित आत्म–स्वीकृति में नैतिकता का समावेश नहीं होता है और व्यक्ति अपनी कमजोरियों को सशर्त दूर करता है जबकि अनानुबंधित आत्म–स्वीकृति में व्यक्ति अपनी कमजोरियों को स्वीकारता है,और उन्हें दूर करने हेतु सदैव तत्पर रहता है, (बर्नार्ड,– द स्ट्रेंथ ऑफ सेल्फ–एक्सेप्टेंसः थ्योरी, प्रैक्टिस एंड रिसर्च, 2014)।

आत्म–स्वीकृत व्यक्ति सामान्य व्यक्तियों से भिन्न ना होकर भी कुछ विशिष्टतायें धारण करता है यथा–

1. सकारात्मक आत्म–अभिवृत्ति
2. आत्म–व्यक्तित्व के सभी पक्षों अथवा गुण–दोषों को पहचानना एवं स्वीकार करना।
3. आत्मालोचना से दूर रहते हुए स्वयं की वास्तविक पहचान को धारण करना।
4. कभी यह विचार नहीं करना कि "यदि ऐसा होता तो आज मैं इस मुकाम पर होता"। (रेफ और सिंगर, 2006)

शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षार्थी–शिक्षकों को दिया जाने वाला प्रशिक्षण उनकी अध्यापन कौशल संबंधी कमियों को दूर करता है और क्षमताओं में अभिवृद्धि करता है। यदि शिक्षार्थी– शिक्षकों में अपनी क्षमताओं एवं कमजोरियों के प्रति आत्म–स्वीकृति नहीं होगी तो वे ना तो अपनी कमजोरियों को दूर कर पाएंगे और ना ही अपनी क्षमताओं का विकास कर पाएंगे साथ ही साथ वे स्वयं को अपने आस–पास के वातावरण में समायोजित नहीं कर पाएंगे। इस प्रकार आत्म–स्वीकृति शिक्षार्थी–शिक्षकों में समायोजित होने के लिए एक आवश्यक गुण है।

शोध के उद्देश्य–

1. शिक्षार्थी–शिक्षकों की आत्म–स्वीकृति का निम्न के सन्दर्भ में अध्ययन करना–

अ) लिंग के आधार पर
आ) संकायवार
इ) परिक्षेत्रवार

अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रस्तावित अनुसन्धान हेतु निम्नांकित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. शिक्षार्थी शिक्षकों की आत्म–स्वीकृति में लैंगिक आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 4, April 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

2. शिक्षार्थी शिक्षकों की आत्म–स्वीकृति में संकाय के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
3. शिक्षार्थी शिक्षकों की आत्म–स्वीकृति में परिक्षेत्र के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

इस शोध में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

शोध चर –

प्रस्तावित शोध कार्य के चर निम्नांकित हैं–

स्वतंत्र चर– आत्म–स्वीकृति

आश्रित चर– लिंग, संकाय एवं परिक्षेत्र।

प्रस्तावित शोध कार्य में राजस्थान राज्य के करौली जिले में संचालित शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालयों में संचालित दो–वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रशिक्षणरत द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों को जनसँख्या के रूप में चयनित किया गया।

न्यादर्श –

राजस्थान राज्य के करौली जिले में कुल 10 शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय हैं जिनमे माध्यमिक स्तर का शिक्षक–प्रशिक्षण (बी.एड.) कार्यक्रम संचालित किया जाता है। इन महाविद्यालयों में प्रतिवर्ष कुल 1320 स्थानों हेतु प्रवेश प्रक्रिया सम्पादित की जाती है। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष (प्रथम एवं द्वितीय वर्ष) में प्रशिक्षणार्थियों की अधिकतम संख्या 1320 संभव है। इन महाविद्यालयों में कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के क्रमशः 70 प्रतिशत, 20 प्रतिशत एवं 10 प्रतिशत स्थान निर्धारित हैं। इन प्रशिक्षाणार्थियों में से केवल द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षाणार्थियों को ही न्यादर्श हेतु चुना गया। तथा न्यादर्श का आकार कुल जनसँख्या 1320 का 25 प्रतिशत अर्थात् 330 रहा।

मानकीकृत या प्रमापीकृत उपकरण

मानकीकृत से तात्पर्य किसी मानक के आधार पर स्वीकृत किया गया है। ये उपकरण पूर्व में किसी विशेष उद्देश्य को लेकर बनाए जाते है जिनकी वैधता व विश्वसनीयता ज्ञात की हुई होती है। इनके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष पूर्णतः मान्य, वैध एवं विश्वसनीय होते है।

1. आत्म–स्वीकृति–एस.बी. कक्कड़ द्वारा विकसित कक्कर सेल्फ एक्सेप्टेंस इन्वेंटरी को प्रयोग में लाया गया।

1 शिक्षार्थी शिक्षकों की आत्म–स्वीकृति में लैंगिक आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 4, April 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारणी – 1

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (.D)	क्रांतिक अनुपात(Critil Rtio)	सार्थकता स्तर	
					0.05 स्तर	0.01 स्तर
पुरूष	210	22.57	5.24	0.139	स्वीकृत	स्वीकृत
महिला	120	23.24	5.48		सार्थक अंतर नहीं है।	

2 शिक्षार्थी शिक्षकों की आत्म–स्वीकृति में संकाय के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी – 2

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (.D)	टी का मान	सार्थकता स्तर	
					0.05 स्तर	0.01
कला संकाय	231	22.95	5.33	0.141	स्वीकृत	स्वीकृत
विज्ञान संकाय	66	21.62	4.00		सार्थक अंतर नहीं है।	

सारणी – 3

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (.D)	टी का मान	सार्थकता स्तर	
					0.05 स्तर	0.01 स्तर
कला संकाय	231	22.95	5.33	0.166	स्वीकृत	स्वीकृत
वाणिज्य संकाय	33	24.21	7.07		सार्थक अंतर नहीं है।	

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 4, April 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारणी – 4

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	टी का मान	सार्थकता स्तर	
					0.05 स्तर	0.01 स्तर
विज्ञान संकाय	66	21.62	4.00	0.028	स्वीकृत	स्वीकृत
वाणिज्य संकाय	33	24.21	7.07		सार्थक अंतर नहीं है।	

3 शिक्षार्थी शिक्षकों की आत्म–स्वीकृति में परिक्षेत्र के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी – 5

समूह(Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	टी का मान	सार्थकता स्तर	
					0.05 स्तर	0.01 स्तर
शहरी	170	22.38	4.99	0.067	स्वीकृत	स्वीकृत
ग्रामीण	160	23.26	5.64		सार्थक अंतर नहीं है।	

निष्कर्ष

शोध में सभी परिकल्पनाऐं सत्य सिद्ध हुई है। इससे स्पष्ट है कि शिक्षार्थी शिक्षकों में लिंग, परिक्षेत्र, विषय आदि के आधार पर आत्मस्वीकृति में कोई अंतर नहीं पाया जाता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 4, April 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सदंर्भ ग्रंथ सूची

1. शेपर्ड, एल.ए., 1978, 'सेल्फ एक्सेप्टेंस : द दवेलुएटिव कॉम्पोनेन्ट ऑफ द सेल्फ–कॉन्सेप्ट कंस्ट्रक्ट, अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल, 16 (2), पृ. 139
2. शुलमैन, एल., (1987), नॉलेज एण्ड टीचिंग : फाउंडेशन्स ऑफ द न्यू रिफार्म, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड।
3. डीवी, जे., (2013), डेमोक्रेसी एण्ड एज्यूकेशन', मैकमिलन, न्यूयॉर्क।
4. पिंट्रिच एवं स्कंक (1996), इंट्रोडक्शन एण्ड रिव्यू ऑफ द लिटरेचर : द रिलेशनशिप बिटवीन साइकोलॉजिकलन वेल बीइंग, सेल्फ एक्सेप्टेंस, क्लाइंट स्टेटस एण्ड काउंसलर
5. स्पेन्स एवं हेल्मरिच (1983), फोकस्ड बिहेवियर, न्यू सर्कल पब्लिकेशन, लंदन।
6. विलियम एवं लिट्विन (1966), सेल्फ एक्सेप्टेंस, राउटलेज पब्लिकेशन, लंदन।
7. एर्कमैन, कनेर, सार्ट, बोरकान और सहान, (2010), ए स्टडी ऑन रिलेशनशिप बिटविन सेल्फ एक्सेप्टेंस, एटीट्यूड विथ स्कूल एण्ड एज्यूकेशनल एचीवमेंट्स इन स्टूडेन्ट्स, सन्टेफोर्ड यूनिवर्सिटी, लंदन।
8. वासिल, (2013), वयस्कों में आत्म–स्वीकृति के मूल्यांकन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।
9. चित्रा और कर्णन, (2014), उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म–स्वीकृति एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन, न्यू सर्कल पब्लिकेशन, दिल्ली।
10. ब्रेनमैन, विलोवर, और लिंच, (2015), ए स्टडी ऑन रिलेशनशिप बिटविन सेल्फ एक्सप्टेंस, एक्सप्टेंस ऑफ अदर पर्सनस् एण्ड ऑइडियोलॉजी ऑफ कंट्रोल टू स्टूडेन्ट्स ऑफ टीचर्स, राउटलेज प्रकाशन, लंदन।
11. तिरुणवुक्करसु और वेंकटराथनम, (2017), वेल्लोर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म–स्वीकृति एवं नियंत्रण के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन, अन्ना विश्वविद्यालय प्रेस, चैन्नई।